## इकाई 18 एध् धातु (आत्मनेपद) आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार

### इकाई की रूपरेखा


18.0 उद्देश्य

18.1 प्रस्तावना

18.2 एध् धातु की आशीर्लिङ् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

18.3 एध् धातु के आशीर्लिङ् लकार प्रक्रिया

18.4 एध् धातु की लोट् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

18.5 एध् धातु के लोट् लकार प्रक्रिया

18.6 सारांश

18.7 शब्दावली

18.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

18.9 अभ्यास प्रश्न


### 18.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- एध् (वृद्धौ) धातु के आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार की प्रक्रिया के बारे में पढ़ेंगे।
- आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों के बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगे।
- आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों की व्याख्या करने में समर्थ हों पाएँगे।
- सूत्रों के व्याख्यान करने की विधा में नैपुण्य प्राप्त करेंगे; तथा

- एध् धातु के आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार के प्रत्येक पुरुष व वचन के अनुसार धातु रूपों को प्रक्रिया के माध्यम से जानकर उनका प्रयोग करने में समर्थ हो पाएंगे।

## 18.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो आपके पाठ्यक्रमानुसार इससे पूर्वतन इकाई में आपने एध् धातु की लुट् व लृट् लकार की प्रक्रिया से सम्बन्धित सूत्रों की व्याख्या का विस्तार से अध्ययन किया था। साथ ही सूत्रों के उदाहरण स्वरूप प्रक्रिया के क्रम का भी अभ्यास आपने किया। इस पाठ में आप एध् धातु की आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार की प्रक्रिया तथा इस प्रक्रिया में आने वाले विशेष सूत्रों का व्याख्यान सहित विस्तार से अध्ययन करेंगें। प्रक्रिया में आने वाले सूत्रों में यदि कोई विशेष अंश भी ध्यातव्य है तो उसका भी सप्रसङ्ग विवेचन इस पाठ में किया जाएगा। जैसे पूर्व पाठ में तदन्तविधि की अपवादभूत परिभाषा 'यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे' का सोदाहरण विवेचन प्रस्तुत किया गया था। इस इकाई में आप एध् धातु के आशीर्लिङ् एवं लोट लकार की प्रक्रिया, रूपों तथा तन्मध्य प्रयुक्त सूत्रों पर विस्तार से अध्ययन करेंगे।

## 18.2 एध् धातु की आशीर्लिङ् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

**सूत्र – लिङः सीयुट् 3/4/102**

**सूत्रवृत्तिः** – लिङः सीयुट् स्यात्।

**सूत्रानुवाद** – लिङ् को सीयुट् आगम हो।

**व्याख्या** – लिङः, सीयुट् यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। लिङः यह षष्ठ्यन्त पद है। अवयव षष्ठी है जिससे 'लिङ् का' ऐसा अर्थ प्राप्त होता है। सीयुट् यह प्रथमान्त है। टित् होने से आद्यवयव होता है। अतः सूत्र का सम्पूर्णार्थ होगा – लिङ् को सीयुट् आगम होता है। लिङ् से यहाँ विधिलिङ् तथा आशीर्लिङ् दोनों अभिप्रेत हैं।

**सूत्र – सुट् तिथोः 3/4/107**

**सूत्रवृत्तिः** – लिङस्तथोःसुट्।

**सूत्रानुवाद** – लिङ् के तकार व थकार को सुट् आगम हो।

**व्याख्या** – सुट्, तिथोः यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। सुट् प्रथमान्त है जो कि टित् होने से आद्यवयव के रूप में प्रसक्त होता है। तिथोः पद में तिश्च थ् च तिथौ, तयोः तिथोः इस प्रकार से विग्रह होने पर षष्ठी द्विवचनान्त है। अवयव षष्ठी होने से तकार व थकार को सुट् आगम होता है ऐसा अर्थ सम्पन्न होगा। तिथोः में ति का इकार उच्चारणार्थ है। किसके तकार व थकार को सुट् होता है इस आकाङ्क्षा का शमन करने हेतु "लिङः सीयुट्" सूत्र से

लिङः की अनुवृत्ति करते हैं तो सूत्र का अर्थ पूर्ण हो जाता है कि – लिङ् के तकार व थकार को सुट् आगम होता है ।

**ध्यातव्य** –सीयुट् तथा सुट् दोनों आगमों में परस्पर कोई बाध्यबाधकभाव नहीं है। क्योंकि दोनों की प्रवृत्ति का विषय भिन्न है। यद्यपि लिङ् लकार में दोनों की प्रवृत्ति है तथापि सीयुट् आगम लिङ् को होता है, जबकि सुट् लिङ् के तकार व थकार को। जैसे – त प्रत्यय को सुट् होगा तो वह स्त बन जाएगा। आताम् के पूर्व में होगा तो आस्ताम् बन जाएगा। थास् में स्थास् इत्यादि। यह प्रक्रिया में अधिक स्पष्ट हो जाएगा।

**उदाहरण – एधिषीष्ट** – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्. लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद प्रथम पुरुष एकवचन विवक्षा में त प्रत्यय करने पर एध् त इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादि प्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय़्त इस अवस्था में "सुट् तिथोः" सूत्र से लिङ् के तकार को सुट् आगम होने तथा अनुबन्ध लोप करने पर एध्+सीय+स् त इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय+स् त इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से वल् पर में होने से यकार का लोप होने पर एध् इ+सी+स्+त इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से दोनों सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+षी+ष् त ऐसी स्थिति में तकार को षकार के योग के कारण "ष्टुना ष्टुः" सूत्र से ष्टुत्व करने से एधिषीष्ट रूप सिद्ध होगा ।

**सूत्र – झस्य रन् 3/4/105**

**सूत्रवृत्तिः** – लिङो झस्य रन् स्यात्।

**सूत्रानुवाद** – लिङ् के झकार के स्थान पर रन् आदेश हो।

**व्याख्या** – झस्य, रन् यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। झस्य यह स्थान षष्ठ्यन्त एकवचन है। रन् पद प्रथमान्त आदेशपरक है। स्थान षष्ठी होने से झकार के स्थान पर, रन् आदेश होता है, इत्यादि अर्थ प्राप्त होता है। "लिङः सीयुट्" सूत्र से लिङः पद की षष्ठ्यन्त की अनुवृत्ति की जाती है। स्थान षष्ठी होने से लिङ् के स्थान पर यह अर्थ करके सम्पूर्ण सूत्रार्थ लब्ध होता है कि – लिङ् के झकार को रन् आदेश होता है ।

**उदाहरण – एधिषीरन्** – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्. लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद प्रथम पुरुष बहुवचन विवक्षा में झ प्रत्यय करने पर एध्+झ इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादि प्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+साय्+झ इस अवस्था में "झस्य रन्"

इस सूत्र से झकार को रन् – आदेश करने पर एध्+सीय्+रन् इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+रन् इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से वल् पर में होने से यकार का लोप होने पर एध्+इ+सी+रन् इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध्+इषी+रन् ऐसा मिलाने पर एधिषीरन् रूप सम्पन्न होता है।

**सूत्र – इटोऽत् 3/4/106**

**सूत्रवृत्तिः** – लिङादेशस्य इटोऽत् स्यात्।

**सूत्रानुवाद** – लिङ् के स्थान पर आदेश हुए इट् के स्थान पर 'अ' आदेश हो।

**व्याख्या** – इटः, अत् यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। "लिङः सीयुट्" से लिङः पद की अनुवृत्ति होती है। इटः यह स्थानषष्ठ्यन्त एकवचनान्त है। इट् के स्थान पर ऐसा अर्थ मिलता है। अत् यह आदेश परक है। यहाँ आदेश अकारमात्र ही है। तकार केवल मुख सुखार्थ उच्चारणार्थ है, न कि तपरकरण। तपरकरण करने पर दीर्घादि की व्यावृत्ति होती है, केवल तत्कालसदृश उच्चारणकाल का ही ग्रहण हो इसलिए तपरकरण किया जाता है। परन्तु प्रकृ त स्थल में ऐसा नहीं है क्योकि अकार के विधीयमान होने से वह दीर्घादिसवर्णों का ग्राहक नहीं होता, अतः व्यावर्त्य के अभाव में तपरकरण मानने की भ्रान्ति न हो एसलिए विस्तार से बताया गया है। अनुवर्तमान लिङः पद भी षष्ठ्यन्त एकवचनान्त है। स्थान षष्ठी होने से यह भी लिङ्के स्थान पर ऐसा बोध कराता है। तो इस प्रकार से सूत्र का फलितार्थ होता है कि – लिङ् के स्थान पर आदेश हुए इट् के स्थान पर 'अ' आदेश होता है।

**उदाहरण – एधिषीय** – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्. लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद उत्तम पुरुष एकवचन विवक्षा में इट् प्रत्यय करने पर एध्+इ इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादि प्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+इ इस अवस्था में "इटोऽत्" इस सूत्र से इकार को अ–आदेश करने पर एध् सीय्+अ इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+अइस् अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+सीय्+अ ऐसा मिलाने पर एधिषीय रूप सम्पन्न होता है।

## 18.3 एध् धातु की आशीर्लिङ् प्रक्रिया

**एधिषीयास्ताम्** – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध् + लिङ् इस स्थिति मेंउसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद प्रथम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आताम् प्रत्यय करने पर एध्+आताम् इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस

सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादि प्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+आ, स्+ताम् इस अवस्था में "सुट् तिथोः" सूत्र से लिङ् के तकार को सुट् आगम होने तथा अनुबन्ध लोप करने पर एध्+सीय्+आ स् – ताम् इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+आ+स्–ताम् इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सीय् के सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+षीय्+आ, स्–ताम् ऐसी स्थिति में वर्णसम्मेलन से एधिषीयास्ताम् रूप सिद्ध होगा।

**एधिषीष्ठाः** – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्+लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद मध्यम पुरुष एकवचन विवक्षा में थास् प्रत्यय करने पर एध्+थास् इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादि प्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+थास् इस अवस्था में "सुट् तिथोः" सूत्र से लिङ् के थकार को सुट् आगम होने तथा अनुबन्ध लोप करने पर एध्+सीय्+स्–थास् इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+स्–थास् इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से वल् पर में होने से यकार का लोप होने पर एध् इ+सी+स्–थास् इस अवस्था में "आदेश प्रत्यययोः" सूत्र से दोनों सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+षी+ष्–थास् ऐसी स्थिति में "ष्टुना ष्टुः" सूत्र से थकार को ष्टुत्व ठकार और अंतिम स को रुत्व विसर्ग करने पर वर्णसम्मेलन से एधिषीष्ठाः रूप सिद्ध होगा।

**एधिषीयास्थाम्** – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्+लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद मध्यम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आथाम् प्रत्यय करने पर एध्+आताम् इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादिप्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+आथाम् इस अवस्था में "सुट् तिथोः" सूत्र से लिङ् के थकार को सुट् आगम होने तथा अनुबन्ध लोप करने पर एध्+सीय्+आ स्–थाम् इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+आ स्–ताम् इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सीय् के सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+षीय्+आ स्–ताम् ऐसी स्थिति में वर्णसम्मेलन से एधिषीयास्थाम् रूप सिद्ध होगा।

**एधिषीध्वम्** – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्+ लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद मध्यम पुरुष बहुवचन विवक्षा में ध्वम् प्रत्यय करने पर एध्+ध्वम् इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादिप्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से

सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+ध्वम् इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+ध्वम् इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से सीय् के यकार का वल् (धकार) के पर में होने के कारण यकार का लोप होने पर एध् इ+सी+ध्वम् इस स्थिति में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सी (सीयुट्) के सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इषी+ध्वम् ऐसी स्थिति में वर्ण सम्मेलन से एधिषीध्वम् रूप सिद्ध होगा।

**एधिषीवहि** – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्+ लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद उत्तम पुरुष द्विवचन विवक्षा में वहि प्रत्यय करने पर एध् वहि इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादिप्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+वहि इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+वहि इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से सीय् के यकार का वल् (वकार) के पर में होने के कारण यकार का लोप होने पर एध् इ+सी+वहि इस स्थिति में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+षी+वहि ऐसा मिलाने पर एधिषीय रूप सम्पन्न होता है ।

**एधिषीमहि** – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध् लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद उत्तम पुरुष बहुवचन विवक्षा में महिङ् प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप होने पर एध+महि इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादिप्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+महि इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+महि इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से सीय् के यकार का वल् (मकार) के पर में होने के कारण यकार का लोप होने पर एध् इ+सी+महि इस स्थिति में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+षी+महि ऐसा मिलाने पर एधिषीय रूप सम्पन्न होता है।

**आशीर्लिङ् लकार** –

एधिषीष्ट, एधिषीयास्ताम्, एधिषीरन्।

एधिषीष्ठाः, एधिषीयास्थाम्, एधिषीध्वम्।

एधिषीय, एधिषीवहि, एधिषीमहि।

## 18.4 एध धातु की लोट् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

**सूत्र – आमेतः 3/4/90**

**सूत्रवृत्तिः** – लोट एकारस्य आम् स्यात्। एधताम्, एधेताम्, एधन्ताम्।

**सूत्रानुवाद** – लोट् के एकार के स्थान पर आम् आदेश हो।

**व्याख्या** – आम्, एतः यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। आम् पद प्रथमा एकवचनान्त है। एतः पद षष्ठी एकवचनान्त है। "लोटो लङ्वत्" सूत्र से लोटः यह स्थान षष्ठ्यन्त पद अनुवृत्त होता है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ होता है कि – लोट् के एकार के स्थान पर आम् आदेश हो। यहाँ आम् में मकार यद्यपि उपदेशावस्था में हल्वर्ण है अतः "हलन्त्यम्" से इसकी इत्संज्ञा प्राप्त होती है। परन्तु "हलन्त्यम्" के अपवाद सूत्र "न विभक्तौ तुस्माः" सूत्र से मकार की इत्संज्ञा का निषेध हो जाता है। इत्संज्ञा नहीं होने से लोप भी नहीं होता। क्योकि इत्संज्ञा होने पर ही लोप होता है।

**उदाहरण – एधताम्** – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्. लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष एकवचन विवक्षा में त प्रत्यय करने पर एध्+त इस स्थिति में त की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+ते इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" इस सूत्र से त प्रत्यय के टि भाग अ को एत्व करने पर एध् अ+त इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से एकार को आम् आदेश करने पर एधताम् रूप सिद्ध होता है।

**सूत्र – सवाभ्यां वाऽमौ 3/4/91**

**सूत्रवृत्तिः** – सवाभ्यां परस्य लोडेतः क्रमाद् वाऽमौ स्तः।

एधस्व, एधेथाम्, एधध्वम्।

**सूत्रानुवाद** – स् और व् से परे लोट् के एकार को क्रमशः 'व' और 'अम्' आदेश हो जाते हैं।

**व्याख्या** – सवाभ्याम्, वाऽमौ यह पदविभाग है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। "लोटो लङ्वत्" सूत्र से 'लोटः' इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। "आमेतः" सूत्र से 'एतः' की अनुवृत्ति होती है। यह भी षष्ठ्यन्त पद है। लोटः में अवयव षष्ठी है और एतः में स्थान षष्ठी, तो इस प्रकार एकार का लोट् के साथ अन्वय करने पर अर्थ होगा – लोट् के अवयव एकार के स्थान पर। सश्च वश्च सवौ, ताभ्यां सवाभ्याम्, यह इतरेतरद्वन्द्वसमास, पञ्चमीद्विवचनान्त है। दिग्योग पञ्चमी होने से 'परस्य' पद का लाभ होता है। सकार और वकार से परे ऐसा अर्थ हो जाता है। वश्च अम् च वाऽमौ यह इतरेतरद्वन्द्व समासघटित पद है, जो कि आदेशपरक है। निमित्त और आदेशों के समानसंख्यक होने से 'यथासंख्यन्याय' से सकार से पर विद्यमान एकार को व, वकार से पर विद्यमान एकार को अम् आदेश हो, तो इस तरह सूत्र का फलितार्थ होता है

– सकार और वकार से परे लोट् के एकार को क्रमशः 'व' और 'अम्' आदेश होते हैं। यह सूत्र 'आमेतः' का अपवाद है।

**उदाहरण – एधस्व** – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्+लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से मध्यम पुरुष एकवचन विवक्षा में थास् प्रत्यय करने पर एध्. थास् इस स्थिति में थास् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+थास् इस अवस्था में "थासः से" इस सूत्र से थास् प्रत्यय के स्थान पर से आदेश करने पर एध्+अ+से इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से एकार को आम् आदेश प्राप्त होने पर उसको बाधकर "सवाभ्यां वामौ" इस सूत्र से सकार परत्र विद्यमान लोट् के एकार को व–आदेश करने पर एधस्व रूप सिद्ध होता है।

**सूत्र –एत ऐ 3/4/93**

**सूत्रवृत्तिः** – लोडुत्तमस्य एत ऐ स्यात्। एधै, एधावहै, एधामहै।

**सूत्रानुवाद** – लोट् के उत्तमपुरुष के एकार को ऐकार आदेश हो।

**व्याख्या** – एतः, ऐ यह पदविभाग है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। "लोटो लङ्वत्" सूत्र से लोटः तथा "आडुत्तमस्य पिच्च" सूत्र से उत्तमस्य पद की अनुवृत्ति होती है। दोनों पद षष्ठ्यन्त हैं। 'लोट् सम्बन्धी उत्तमपुरुष के' यह अर्थ होगा। एतः पद भी स्थानषष्ठ्यन्त है और ऐ पद आदेशपरक प्रथमान्त है, तो इस प्रकार सूत्रार्थ फलित हुआ कि लोट् सम्बन्धी उत्तमपुरुष के एकार को ऐ–आदेश हो। यह सूत्र भी पूर्व सूत्र की तरह "आमेतः" सूत्र का अपवाद है।

**विशेष**– इस प्रक्रिया में आए "आडुत्तमस्य पिच्च" तथा "आटश्च" सूत्र के बारे में आप भू धातु के लोट् उत्तमपुरुष प्रक्रिया में अध्ययन कर चुके हैं, तथापि इनकी संक्षेप में व्याख्या आपके सौकर्य के लिए प्रस्तुत की जा रही है।

**सूत्र – आटश्च 6/1/90**

**सूत्रवृत्तिः** – आटोऽचि परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्।

**सूत्रानुवाद** – आट् से अच् परे रहते पूर्व+पर के स्थान पर वृद्धि एकादेश होता है।

**व्याख्या** – आटः, च यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। "एकः पूर्वपरयोः" का अधिकार इस सूत्र में आता है। "वृद्धिरेचि" सूत्र से वृद्धि पद की अनुवृत्ति आती है। "इको यणचि" सूत्र से अचि अनुवृत्त होता है। आटः यह पञ्चम्यन्त पद है। आट् से पर में ऐसा अर्थ होता है। अचि पद के सप्तम्यन्त होने से तस्मिन् परे ऐसा अर्थ होगा। "एकः पूर्वपरयोः" में षष्ठी द्विवचन है, इस अधिकार सूत्र की उपस्थिति से पूर्व और पर के स्थान पर ऐसा अर्थ मिलता है। तदनुसार आट् से पर में अचि परे पूर्व पर दोनों के स्थान एकादेश होता है यह निष्कृष्ट अर्थ है और

वह एकादेश "वृद्धिरेचि" सूत्र से अनुवृत्त वृद्धि पद के कारण वृद्धिरूप होता है यह सूत्रार्थ फलित हुआ।

**सूत्र – आडुत्तमस्य पिच्च 3/4/92**

**सूत्रवृत्तिः** – लोडुत्तमस्य आट् स्यात् पिच्च।

**सूत्रानुवाद** – लोट् के उत्तम पुरुष को आट् का आगम हो औप उत्तम पुरुष पित् माना जाए।

**व्याख्या** – आट्, उत्तमस्य, पित्, च– यह पदविभाग है। यह चतुष्पद सूत्र है। आट् पद प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त है। उत्तमस्य यह षष्ठी एकवचनान्त है, यह अवयव षष्ठी है। पित् पद प्रथमा एकवचनान्त है। च अव्ययपद है। "लोटो लङ्वत्" सूत्र से लोटः यह षष्ठी एकवचनान्त पद अनुवृत्त होता है। सम्बन्ध सामान्य अर्थ में षष्ठी है। लोटः पद का अन्वय उत्तमस्य पद के साथ होता है। तदनुसार इसका अर्थ होता है लोट् से सम्बन्धित उत्तमपुरुष को (उत्तमपुरुष के अवयव रूप में)। आट् जो कि टित् होने के कारण आगम स्वरूप है वह लोट् सम्बन्धित उत्तम पुरुष के तीनों प्रत्यय इट्, वहि और महिङ् के अवयव के रूप में विहित होता है। यहाँ प्रकृत सूत्र के द्वारा उत्तम पुरुष को पित् का अतिदेश किया जाता है। अर्थात् पित्व धर्म का आरोप किया जाता है। तो इस प्रकार सूत्रार्थ फलित हुआ कि – लोट् के उत्तम पुरुष को आट् आगम होता है और उत्तम पुरुष पित् माना जाता है।

**ध्यात्वय** – पित् करने का प्रयोजन यह है कि "सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने पर उसको ङिद्वत् कर दिया जाता है। अर्थात् ङित्व धर्म का आरोप उस प्रत्यय में होता है। तो इट्, वहि और महिङ् प्रत्यय भी अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं तो यहाँ ङित्व का अतिदेश ना हो इसलिए पित्व का विधान किया गया है।

**उदाहरण – एधै** – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध् लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से उत्तम पुरुष एकवचन विवक्षा में इट् प्रत्यय करने पर एध् इट् इस स्थिति में इट् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+इ इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" इस सूत्र से इ प्रत्यय के स्थान पर ए–आदेश करने पर एध्+अ+ए इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से एकार को आम् आदेश प्राप्त होने पर उसको बाधकर "एत ऐ" इस सूत्र से लोट् के एकार को ऐ–आदेश करने पर एध्+ऐ इस अवस्था में "आडुत्तमस्य पिच्च" सूत्र से उत्तम पुरुष के प्रत्यय को आडागम–अनुबन्ध लोप करने पर एध्+आ+ऐ ऐसी स्थिति में "आटश्च" सूत्र से आकार व ऐकार के स्थान पर ऐकार वृद्धि होने पर एध्+ऐ इस अवस्था में पुनः "वृद्धिरेचि" सूत्र से अकार तथा एकार के स्थान पर वृद्धयेकादेश होने पर एधै यह अभीष्ट रूप सिद्ध होता है।

## 18.5 एध् धातु की लोट् प्रक्रिया

**एधेताम्** – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्+लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आताम् प्रत्यय करने पर एध्+आताम् इस स्थिति में आताम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+आताम् इस अवस्था में "सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने के कारण आताम् में ङित् का अतिदेश होने से "आतो ङितः" सूत्र से आकार को इय् आदेश होने पर एध् अ+इय्+ताम् इस स्थिति में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से यकार लोप और "आद्गुणः" से अ–इ को एकार होने तथा "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से ताम् के आम् को एत्व होने पर एधेते इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से अन्तिम एकार के स्थान पर आम् आदेश होने पर एधेताम् रूप सिद्ध होता है।

**एधन्ताम्** – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्. लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष बहुवचन विवक्षा में झ प्रत्यय करने पर एध्.झ इस स्थिति में झ की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्अ+झ इस अवस्था में "झोऽन्तः" सूत्र से झ को अन्तादेश होने पर एध+अ+अन्त इस स्थिति में "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से अन्त के टि भाग अन्तिम अकार को एत्व होने पर एध्+अ+अन्ते इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से अन्तिम एकार के स्थान पर आम् आदेश होने पर एध्+अ+अन्ताम् इस स्थिति में "अतो गुणे" सूत्र से दोनों अकार के स्थान पर पररूप एकादेश होने पर एधन्ताम् रूप सिद्ध होता है।

**एधेथाम्** – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्. लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से मध्यम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आथाम् प्रत्यय करने पर एध्. आथाम् इस स्थिति में आथाम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+आथाम् इस अवस्था में "सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने के कारण आथाम् में ङित् का अतिदेश होने से "आतो ङितः" सूत्र से आकार को इय् आदेश होने पर एध् अ+इय्+थाम् इस स्थिति में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से यकार लोप और "आद्गुणः" से अ–इ को एकार होने तथा "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से थाम् के आम् को एत्व होने पर एधेथे इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से अन्तिम एकार के स्थान पर आम् आदेश होने पर एधेथाम् रूप सिद्ध होता है।

**एधध्वम्** – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्+लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से मध्यम पुरुष बहुवचन विवक्षा में ध्वम् प्रत्यय करने पर एध्+ध्वम् इस स्थिति में ध्वम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा

शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्अ+ध्वम् इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" इस सूत्र से ध्वम् के टि भाग को एत्व आदेश करने पर एध्+अ+ध्वे इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से एकार को आम् आदेश प्राप्त होने पर उसको बाधकर "सवाभ्यां वाऽमौ" इस सूत्र से वकार परत्र विद्यमान लोट् के एकार को अम्–आदेश करने पर एधध्वम् रूप सिद्ध होता है।

**एधावहै** – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्+लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से उत्तम पुरुष द्विवचन विवक्षा में वहि प्रत्यय करने पर एध्+वहि इस स्थिति में वहि की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+वहि इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" इस सूत्र से वहि प्रत्यय के टिभाग के स्थान पर ए–आदेश करने पर एध्+अ+वहे इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से एकार को आम् आदेश प्राप्त होने पर उसको बाधकर "एत ऐ" इस सूत्र से लोट् के एकार को ऐ–आदेश करने पर एध्+वहै इस अवस्था में "आडुत्तमस्य पिच्च" सूत्र से उत्तम पुरुष के प्रत्यय को आडागम–अनुबन्ध लोप करने पर एध+आ+वहै ऐसी स्थिति में "अकः सवर्णे दीर्घः" सूत्र से अकार–आकार के स्थान पर आकार सवर्णदीर्घ होने पर एधावहै यह अभीष्ट रूप सिद्ध होता है।

**एधामहै** – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्. लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से उत्तम पुरुष बहुवचन विवक्षा में महिङ् प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप होने पर एध्+महि इस स्थिति में महि की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+महि इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" इस सूत्र से महि प्रत्यय के टिभाग के स्थान पर ए–आदेश करने पर एध्+अ+महे इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से एकार को आम् आदेश प्राप्त होने पर उसको बाधकर "एत ऐ" इस सूत्र से लोट् के एकार को ऐ–आदेश करने पर एध+महै इस अवस्था में "आडुत्तमस्य पिच्च" सूत्र से उत्तम पुरुष के प्रत्यय को आडागम–अनुबन्ध लोप करने पर एध+आ+महै ऐसी स्थिति में "अकः सवर्णे दीर्घः" सूत्र से अकार–आकार के स्थान पर आकार सवर्णदीर्घ होने पर एधामहै यह अभीष्ट रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार यह एध् धातु की आशीर्लिङ् एवं लोट् प्रक्रिया से सम्बन्धित पाठ समाप्त होता है।

**लोट् लकार** –

एधताम्, एधेताम्, एधन्ताम्।

एधस्व, एधेथाम्, एधध्वम्।

एधै, एधावहै, एधामहै।

## 18.6 सारांश

इस पाठ में आपने एध् धातु के आशीर्लिङ् व लोट् लकार की प्रक्रिया व प्रक्रिया में आए सूत्रों के सम्बन्ध में अध्ययन किया। पहले आपने आशिर्लिङ् लकार की प्रक्रिया के सम्बन्ध में पढ़ा जिसमें मुख्यतया चार सूत्रों की व्याख्या आपने अधिगत की। इसमें पहला सूत्र था "लिङः सीयुट्"। यह सूत्र लिङ् लकार को सीयुट् आगम करता है। टित् होने के कारण यह आद्यवयव के रूप में होता है। इस क्रम में दूसरा सूत्र था "सुट् तिथोः"। इस सूत्र से लिङ् के तकार व थकार को सुट् आगम होता है। यह भी टित् होने के कारण आद्यवयव होता है। सीयुट् व सुट् में परस्पर बाध्यबाधकभाव तो नहीं है क्योंकि सीयुट् लिङ् लकार के अवयव के रूप में प्रवृत्त होता है और सुट् तो लिङ् के स्थान पर आए प्रत्ययस्थ तकार व थकार के अवयव के रूप में होता है। इसका फलभेद प्रक्रिया के माध्यम से विस्तार से समझाया जा चुका है। फिर तीसरा सूत्र आया "झस्य रन्" इससे लिङ् के झप्रत्यय को रन् आदेश होता है, और आशीर्लिङ् प्रक्रिया का अन्तिम सूत्र था "इटोऽत्", इससे लिङ् के स्थान पर आदेश हुए इट् के स्थान पर अकार आदेश होता है।

आशीर्लिङ् प्रक्रिया के बाद आपने लोट् लकार प्रक्रिया में आए सूत्रों का विस्तार से अध्ययन किया। जहाँ पहले "आमेतः" सूत्र की व्याख्या से आपको ज्ञात हुआ कि लट् लकार की एधते रूप की प्रक्रिया पर्यन्त समानतया प्रक्रिया द्वारा एधते बनने पर "आमेतः" सूत्र से लोट् के एकार को आम् आदेश किया जाता है जिसके फलस्वरूप एधताम् रूप निष्पन्न होता है। उसके बाद "सवाभ्यां वामौ" सूत्र से आपको ज्ञात हुआ कि सकार व वकारसे पर जो लोट् का एकार है उसको क्रमशः व और अम् आदेश होते है। आमेतः सूत्र का यह अपवाद है। उदाहरण – एधस्व, एधध्वम्। ततः पश्चात् "एत ऐ" सूत्र जो कि उत्तम पुरुष में प्रवृत्त होता है उसके द्वारा लोट् के उत्तम पुरुष के एकार को ऐकार आदेश किया जाता है। यह भी केवल उत्तम पुरुष में प्रवृत्त होने के कारण विशेष विहित होने से 'आमेतः' सूत्र का अपवाद है। तदनुसार एधै, एधावहै, एधामहै रूप निष्पन्न होते हैं।

## 18.7 शब्दावली

आगम – टित्–कित्–मित् इत्यादि लिङ्गों से चिह्नित आगम होते हैं। जो किसी के अवयव के रूप में आते हैं। अवयव के रूप में विधीयमान ऐसा अर्थ समझना चाहिए। इसलिए मित्रवत् आगमः अर्थात उसे स्वीकार करना चाहिए ऐसा कहा जाता है। क्योंकि ये किसी को हटाकर उसके स्थान पर नहीं होते हैं। अपितु अवयव रूप में होते हैं। इसलिए अवयव षष्ठी का अर्थ अवयव–अवयवीभाव सम्बन्ध माना जाता है।

आदेश – आगम के विपरीत आदेश किसी के स्थान पर होते हैं। यह किसी वर्ण अथवा पद को हटाकर प्रवृत्त होते हैं। इसलिए शत्रुवत् आदेशः ऐसा कहा जाता है। आदेश निवर्तक

(हटाने वाला) होता है जो किसी स्थानी के स्थान पर उसको निवृत्त करके होता है। स्थानी निवर्त्य होता है जिसको कि आदेश के द्वारा निवृत्त कर दिया जाता है अर्थात् हटा दिया जाता है। इसलिए स्थान षष्ठी का अर्थ निवर्त्यनिवर्तकभाव सम्बन्ध माना जाता है।

अतिदेश – अतिदेश का अर्थ आरोप होता है। जब किसी धर्मी में किसी धर्म का आरोप किया जाता है तो वह अतिदेश कहलाता है। जैसा कि सार्वधातुकमपित् सूत्र से अपित् (जो पित् ना हो = जिसमें पकार कि इत्संज्ञा न हुई हो) सार्वधातुक प्रत्यय को ङित् की तरह मान लिया जाता है, उसमें ङित्व का अतिदेश या आरोप कर देते हैं। ङिद्वत् भाव होने से ङित् होने पर जो कार्य प्रसक्त होते हैं उनका विधान किया जाता है। गुणनिषेध, सम्प्रसारण इत्यादि ङित्वप्रयुक्त कार्य हैं।

अपवाद – "यत्कर्तृकावश्यप्राप्तौ यो विधिरारभ्यते स तस्यापवादः" इस नियम के अनुसार जब किसी विधिसूत्र की किसी स्थल पर अवश्यप्राप्ति हो तो भी किसी अन्य विधिसूत्र का आरम्भ करें तो वह अवश्य प्राप्त विधि का अपवाद होता है। जैसे – लोट् के एकार के स्थान पर "आमेतः" से आत्व की अवश्य प्राप्ति होने पर भी "सवाभ्यां वाऽमौ" यह सूत्र आरम्भ किया गया। क्योंकि लोट् लकार में एकार जहाँ–जहाँ मिलेगा वहाँ–वहाँ आमेतः की अवश्य प्राप्ति है। लेकिन जहाँ पर सकार और वकार से पर में लोट् का एकार मिलता है वहाँ भी अगर आकार होने लगे तो सवाभ्यां वाऽमौ सूत्र निरवकाश हो जाएगा अर्थात् कहीं प्रवृत्त नहीं हो पाएगा। अतः किसी विधि का निरवकाश होना ही अपवाद बनने में बीज है।

यथासंख्यन्याय – "यथासंख्यमनुदेशः समानाम्" इस परिभाषा सूत्र से उद्देश्य और विधेय के समान होने पर समसम्बन्धी विधि यथासंख्य (क्रमशः) होती है ऐसा अर्थ प्राप्त होता है। जैसे – "इको यणचि" सूत्र में चार इक् वर्णों (इ, उ, ऋ, ऌ) के स्थान पर चार यण् वर्ण (य्, व्, र्, ल्) क्रमशः प्रवृत्त होते हैं। इसी प्रकार "समूलाकृतजीवेषु हन्–कृञ्–ग्रहः" यहाँ पर यद्यपि विधेय णमुल् एक ही है तथापि समूल–अकृत–जीव इन तीन उपपदों के रहने पर हन्–कृञ्–ग्रह तीन धातुओं के सम्बन्ध में समान संख्याक होने से यथासंख्य की प्रवृत्ति हो जाती है। इसलिये इस सूत्र में समानाम् पद में 'कर्मणि षष्ठी' न मानकर सम्बन्ध सामान्य में षष्ठी मानी है।

## 18.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें


1. लघुसिद्धान्तकौमुदी –आचार्य भीमसेनशास्त्रीकृत भैमीव्याख्या सहित (द्वितीय भाग)
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य सुरेन्द्रदेवस्नातकशास्त्रीकृत आशुबोधिनी हिन्दीव्याख्या सहित
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. ईश्वरचन्द्रकृत सोमलेखा हिन्दीव्याख्यासहित
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य अर्कनाथचौधरीकृत चन्द्रकला संस्कृतहिन्दी–व्याख्याद्वय सहित

## 18.9 अभ्यास प्रश्न

1. "लिङः सीयुट्" सूत्र में विधेय सीयुट् आगम किसका आद्यवयव होता है?
2. लिङ् के झ प्रत्यय के स्थान पर क्या आदेश होता है?
3. "इटोऽत्" सूत्र में लिङः की अनुवृत्ति किस सूत्र से आती है?
4. "सुट् तिथोः" से विधीयमान सुट् आगम किसको होता है?
5. "आमेतः" सूत्र से किसका विधान किया जाता है?
6. "सवाभ्यां वाऽमौ" सूत्र किसका अपवाद है?
7. "सवाभ्यां वाऽमौ" सूत्र किसके पर में क्या आदेश करता है?
8. "सवाभ्यां वाऽमौ" सूत्र में लोटः इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति किस सूत्र से होती है?
9. "एत ऐ" सूत्र लोट् लकार में किस पुरुष में प्रयुक्त होता है?
10. "एत ऐ" सूत्र से किसका विधान किया गया है?

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY